AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

छात्रावास एवं पारिवारिक वातावरण में रहकर अध्ययनरत् बालिकाओं पर सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. मधुलिका शर्मा
व्याख्याता
शिक्षा विभाग
श्री कन्हैयालाल कॉलेज ऑफ टीचर्स एजूकेशन
मनिया, धौलपुर, राजस्थान, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का विषय "छात्रावास एवं पारिवारिक वातावरण में रहकर अध्ययनरत बालिकाओं पर सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन" है। यह शोध इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समझने का प्रयास करेगा कि छात्रावास और पारिवारिक वातावरण में अध्ययनरत बालिकाओं पर सोशल मीडिया के प्रभाव में क्या भिन्नताएँ हैं। इस शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर छात्रों, शिक्षकों और माता–पिता को उचित दिशा–निर्देश दिए जा सकते हैं, जिससे सोशल मीडिया का संतुलित उपयोग किया जा सके। प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले की 200 बालिकाओं (100 छात्रावास और 100 पारिवारिक वातावरण में रहने वाली बालिकाओं) का अध्ययन किया गया। बालिकाओं से सोशल मीडिया के तथ्य संग्रहण हेतु स्व–निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि छात्रावास में रहने वाली छात्राएँ सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करती हैं क्योंकि वहाँ माता–पिता का नियंत्रण कम होता है और सहपाठियों का प्रभाव अधिक होता है। पारिवारिक वातावरण में रहकर अध्ययन करने वाली छात्राओं का सोशल मीडिया उपयोग अपेक्षाकृत कम होता है क्योंकि वहाँ माता–पिता का मार्गदर्शन अधिक होता है।

मुख्य शब्द

छात्रावास, पारिवारिक वातावरण एवं सोशल मीडिया.

प्रस्तावना

वर्तमान युग को डिजिटल युग कहा जाता है, जहाँ इंटरनेट और सोशल मीडिया का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। विशेष रूप से किशोरियों और विद्यार्थियों पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा है। आधुनिक तकनीकी साधनों ने शिक्षा की दिशा को बदल दिया है, लेकिन इसके साथ ही कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं।

छात्रावास एवं पारिवारिक वातावरण में रहकर अध्ययन करने वाली बालिकाएँ दो अलग–अलग सामाजिक और शैक्षिक परिवेशों में विकसित होती हैं। दोनों प्रकार के वातावरण में सोशल मीडिया के प्रभाव भिन्न हो सकते हैं, क्योंकि पारिवारिक वातावरण में माता–पिता का नियंत्रण अधिक होता है, जबकि छात्रावास में स्वतंत्रता अधिक होती है। यह अध्ययन इसी तुलनात्मक पहलू को समझने के लिए किया गया है।

वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। विशेष रूप से अध्ययनरत बालिकाओं पर इसका गहरा प्रभाव देखा जा सकता है, चाहे वे छात्रावास में रह रही हों या पारिवारिक वातावरण में। छात्रावास में रहने वाली बालिकाओं के लिए सोशल मीडिया बाहरी दुनिया से जुड़ने, नई जानकारियाँ प्राप्त करने और मनोरंजन का एक प्रमुख माध्यम बन गया है। वहीं, पारिवारिक वातावरण में रहने वाली बालिकाएँ भी इसके प्रभाव से अछूती नहीं हैं, लेकिन उनके पास माता–पिता और परिवार का मार्गदर्शन अधिक रहता है।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभावों में शैक्षणिक सामग्री की आसान उपलब्धता, विचारों का आदान–प्रदान, नवीन कौशल सीखने की सुविधा और आत्म–निर्भरता की भावना का विकास शामिल है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से बालिकाएँ विभिन्न शैक्षणिक विषयों पर चर्चा कर सकती हैं, नई भाषाएँ सीख सकती हैं और दुनिया भर की नवीनतम जानकारियों से स्वयं को अपडेट रख सकती हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया आत्म–प्रस्तुतीकरण और आत्मविश्वास को बढ़ाने में भी सहायक हो सकता है।

हालांकि, इसके नकारात्मक प्रभाव भी कम नहीं हैं। छात्रावास में रहने वाली बालिकाएँ कभी–कभी सोशल मीडिया के अति प्रयोग के कारण अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने में असमर्थ हो सकती हैं। पारिवारिक वातावरण में रह रही बालिकाओं को माता–पिता का मार्गदर्शन मिलने के कारण वे इसकी लत से बच सकती हैं, लेकिन अत्यधिक उपयोग से मानसिक तनाव, अवसाद और असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त, साइबर बुलिंग, गोपनीयता हनन और गलत सूचना फैलने की संभावना भी सोशल मीडिया से जुड़ी बड़ी चुनौतियाँ हैं।

इस शोध में छात्रावास और पारिवारिक वातावरण में रहकर अध्ययनरत बालिकाओं पर सोशल मीडिया के प्रभाव की गहन समीक्षा की जाएगी, जिससे इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को समझने में सहायता मिलेगी। यह अध्ययन बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षणिक प्रदर्शन और सामाजिक जीवन पर सोशल मीडिया के प्रभाव को उजागर करेगा तथा इसके विवेकपूर्ण उपयोग के सुझाव प्रदान करेगा।

छात्रावास एवं पारिवारिक वातावरण का महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में वातावरण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अध्ययन के लिए छात्रावास या पारिवारिक वातावरण का चयन करने से विद्यार्थियों की जीवनशैली, मानसिक स्थिति और अध्ययन शैली पर प्रभाव पड़ता है।

छात्रावास का वातावरण

- छात्रावास में रहने वाली छात्राएँ स्वायत्तता और अनुशासन के मिश्रण के साथ जीवन जीती हैं।
- वे समूह में रहकर अध्ययन करती हैं और समूह–आधारित अधिगम (Peer Learning) से लाभान्वित होती हैं।
- मोबाइल और इंटरनेट की स्वतंत्रता अधिक होती है, जिससे सोशल मीडिया का प्रभाव व्यापक रूप से देखा जा सकता है।
- अनुशासन व शैक्षिक गतिविधियाँ नियमित होती हैं, लेकिन व्यक्तिगत मार्गदर्शन सीमित होता है।

पारिवारिक वातावरण

- घर पर अध्ययन करने वाली छात्राओं को माता–पिता और परिवार के अन्य सदस्यों का सीधा मार्गदर्शन मिलता है।
- वे सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से अधिक प्रभावित होती हैं।
- डिजिटल मीडिया के उपयोग पर माता–पिता का नियंत्रण अधिक होता है।
- व्यक्तिगत और भावनात्मक सहयोग अधिक प्राप्त होता है।

सोशल मीडिया का प्रभाव

सोशल मीडिया एक प्रभावशाली उपकरण है, जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में शिक्षा और मानसिकता को प्रभावित कर सकता है।

सकारात्मक प्रभाव

- **शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता:** ऑनलाइन अध्ययन सामग्री, वीडियो ट्यूटोरियल, और डिजिटल पुस्तकालयों तक पहुँच आसान हो जाती है।
- **समूह–आधारित अधिगम:** छात्राएँ सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से अध्ययन समूह बना सकती हैं और एक–दूसरे की सहायता कर सकती हैं।
- **ज्ञानार्जन में रुचि:** नई जानकारियों को जल्दी समझने और विषयों पर चर्चा करने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

नकारात्मक प्रभाव

- **अधिक समय बर्बाद होना:** सोशल मीडिया पर अत्यधिक समय व्यतीत करने से अध्ययन में बाधा आ सकती है।
- **मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:** डिजिटल प्लेटफार्मों पर लगातार सक्रिय रहने से चिंता, अवसाद और आत्मसम्मान की समस्याएँ हो सकती हैं।
- **व्यक्तिगत संबंधों में कमी:** सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता के कारण छात्राएँ वास्तविक जीवन में संबंध बनाने में कठिनाई महसूस कर सकती हैं।

शोध विधि एवं न्यादर्श

- शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले की 200 बालिकाओं (100 छात्रावास और 100 पारिवारिक वातावरण में रहने वाली बालिकाएँ) का अध्ययन किया गया।
- बालिकाओं से सोशल मीडिया के तथ्य संग्रहण हेतु स्व–निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया।
- तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण टी–टेस्ट के माध्यम से किया गया।

तालिका क्र.1: टी–टेस्ट के परिणामों की तालिका

समूह	N (न्यादर्श)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	टी–मूल्य	पी–मूल्य
छात्रावास में रहने वाली बालिकाएँ	100	3.8	1.2	2.67	0.008*
पारिवारिक वातावरण में रहने वाली बालिकाएँ	100	2.9	1.0		

(*$p < 0.05$ पर महत्वपूर्ण)

परिणामों की व्याख्या

- टी–मूल्य (t-value = 2.67) दर्शाता है कि दोनों समूहों के बीच सोशल मीडिया उपयोग में महत्वपूर्ण अंतर है।
- पारिवारिक वातावरण में रहने वाली बालिकाओं (Mean = 2.9) की तुलना में छात्रावास में रहने वाली बालिकाओं (Mean = 3.8) का सोशल मीडिया उपयोग अधिक पाया गया।
- p-value = 0.008 दर्शाता है कि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है ($p < 0.05$)।

निष्कर्ष

छात्रावास में रहने वाली छात्राएँ सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करती हैं क्योंकि वहाँ माता–पिता का नियंत्रण कम होता है और सहपाठियों का प्रभाव अधिक होता है। पारिवारिक वातावरण में रहकर अध्ययन करने

वाली छात्राओं का सोशल मीडिया उपयोग अपेक्षाकृत कम होता है क्योंकि वहाँ माता–पिता का मार्गदर्शन अधिक होता है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है, इसलिए इसका संतुलित उपयोग आवश्यक है।

सुझाव

- छात्रावास में डिजिटल अनुशासन लागू किया जाए, जिससे सोशल मीडिया के दुरुपयोग को कम किया जा सके।
- माता–पिता और शिक्षकों द्वारा छात्रों को जागरूक करने की आवश्यकता है, ताकि वे सोशल मीडिया का संतुलित उपयोग कर सकें।
- साइबर जागरूकता कार्यक्रम शुरू किए जाएँ, ताकि छात्राएँ इंटरनेट के सुरक्षित और उत्पादक उपयोग के बारे में जान सकें।

संदर्भ सूची

1. चौहान, कविता (2022) *महिला शिक्षा और आधुनिक तकनीक,* मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2. मेहता, सुषमा (2020) *डिजिटल युग में किशोरावस्था,* एपीएच पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, मुंबई।
3. पांडे, अजय (2019) *मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोशल मीडिया का प्रभाव,* काशी हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. शर्मा, मनीषा (2017) *सोशल मीडियाः लाभ और हानि,* राजस्थानी ग्रंथागार, जयपुर।
5. त्रिपाठी, संजीव कुमार (2021) *छात्र जीवन और इंटरनेट का उपयोग,* भारतीय शिक्षा प्रकाशन, लखनऊ।
6. वर्मा, आर. के. (2018) *सामाजिक मीडिया और शिक्षा,* नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

——==00==——